# विश्वास

**लेखकः**

**सैय्यद मुर्तज़ा मुजतहेदी सीसतानी**

अनुवादकः

ज़ैन अलवी जौनपूरी

WWW.ALMONJI.COM

Email: info@almonji.com

किताब का नामः विश्वास
लेखकः सैय्यद मुर्तज़ा मुजतहेदी सीसतानी
अनुवादकः ज़ैन अलवी जौनपूरी
नज़रे सानीः फ़िज़्ज़ा सिद्दीक़ा अज़हरी
कम्पोज़िंगः मोहम्मद हुसैनी जौनपूरी

## विश्वास

### विश्वास का महत्व

विश्वास, ग़ैबत के ज़माने को पहचानने का एक रास्ता है।

विश्वास, आलमे मलक़ूत (वह दुनिया जहाँ फ़िरश्ते रहते हैं और जिस को अभी देखा नहीं जा सकता है।) तक पहुँचने का पुल और रास्ता है।

विश्वास, ख़ुदा के नेक बंदो की सिफ़त है।

विश्वास, अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के साथियों, और दोस्तों की ख़ास विशेष्ता है।

विश्वास, इंसान के अंदर एक रूहानी शक्ति (आध्यात्मिक शक्ति) को पैदा करता है।

विश्वास, अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम से संपर्क का वसीला है।

विश्वास, अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम से क़रीब होने का वसीला है।

इंसान अपने अंदर विश्वास पैदा करके, अपने दिल को फ़रिश्तों का घर बना सकता है और फिर उसकी सहायता से शैतान के शर से भी दूर रह सकता है और शैतान को अपने से दूर कर सकता है। और जब शैतान को अपने से दूर रखेगा तो उससे इंसान के अंदर आध्यात्मिक शक्तियाँ पैदा होंगी और ऐसी सूरत में इंसान का दिल नूर से भर जाएगा।

इसी लिए जब इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ ज़हूर करेंगे तो सब लोगों का दिल विश्वास और यक़ीन से भरा हुआ होगा। क्योंकि उस दिन जब दुनिया की सब से पुरानी इबादत गाह यानी ख़ान-ए-काबा से इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ की आवाज़ दुनिया के सारे लोगों के कानो में गूंजेगी तो इबलीस और उसके मानने वालों के दिलों में डर और भय पैदा हो जाएगा। और इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के ज़हूर से ही सारे शैतानों का नाश हो जाएगा।

उस समय लोगों का दिल शक, डर और भय से मुक्ति पा जाएगा और उसे में इतमीनान भर जाएगा। ज़हूर के बा बरकत दिन सब के दिल विश्वास, यक़ीन, और ईमान से भर जाएँगे। उस दिन इंसान के पास ईमान ना लाने का कोई बहाना नहीं रह जाएगा इस लिए की उस दिन ईमान लाने के सारे वसाएल उपस्थित हो जाएँगे।

इस बात को विस्तार से बयान करने के लिए हम कुछ नुकात को बयान करेंगेः

ख़ुदा वन्दे आलम क़ुर्आन मजीद में जनाबे इब्राहीम के बारे में फ़रमाता हैः

وکذلک نری ابراھیم ملکوت السموات والارض ولیکون من الموقنین

और इसी तरह हम जनाबे इब्राहीम को ज़मीन व आसमान को दिखाते हैं ताकि वह यक़ीन करने वालों में से हो जाएँ।(१)

सफ़वान कहते हैं मैंने इमाम-ए-रज़ा अलैहिस्सलाम से इस आयत के बारे में पूछा जो जनाबे इब्राहीम अलैहिस्सलाम से ख़ुदा वन्दे आलम ने फ़रमाया थाः

أولم تؤمن قال بلی ولکن لیطمئنّ قلبی

क्या जनाबे इब्राहीम अलैहिस्सलाम को यक़ीन नहीं था ? और क्या उनके दिल में कोई शक था ?(२)

قال لاکان علی یقین ولکنّہ اراد من اللہ الزیادۃ فی یقینہ

हज़रत इमाम-ए-रज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः
नहीं ऐसा नहीं है। उन्हें यक़ीन था मगर उन्होंने ख़ुदा से चाहा कि उनका यक़ीन ज़्यादा हो जाए। और इसी करण जनाबे इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आलमे मलकूत को और ज़मीन के सारे हिस्सों को देखा और उनके यक़ीन में इज़ाफ़ा हो गया। और फिर उनके अंदर यह शक्ति भी पैदा हो गयी कि वह लोगों को अंदर भी यक़ीन पैदा कर सकें।(३)

ज़हूर के बा बरकत ज़माने और इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के न्यायिक राज्य पर ध्यान देने से यह पता चलता है कि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ ख़ुद भी आलमे मलकूत के मालिक हैं और वह कहीं से भी ज़मीन का और आलमे

मलक़ूत को देख सकते हैं और वहाँ जब चाहें पहुँच सकते हैं। जब ऐसा होगा तो फिर सोचें कि उस ज़माने के लोगों के यक़ीन (विश्वास) की सीमा क्या होगी और उनका यक़ीन किस मंज़िल पर होगा ?

और जितना यक़ीन (विश्वास) बढ़ता जाएगा उतना ही शैतान पर क़ाबू होता जाएगा, और जितना-जितना शैतान पर क़ाबू होता जाएगा उतना ही ईमान बढ़ता जाएगा।

## विश्वास की निशानियाँ

### १. विश्वास, दिल को मज़बूत बनाता है।

इंसान नसीहत के माध्यम से अपने दिल को नया जीवन दे सकता है और उसमें आत्मा डाल सकता है। जिस तरह ईमान-ए-कामिल के करण यक़ीन बढ़ता है। इस लिए कि अगर यक़ीन मोकम्मल हो तो फिर शक की कोई गुंजाइश नहीं। इस लिए हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने यक़ीन को मज़बूत करें।

हज़रत अली अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

احی قلبک بالموعظۃ.....و قوّہ بالیقین

वाज़ व नसीहत के माध्यम से अपने दिल को नया जीवन दो और यक़ीन (विश्वास) के माध्यम से उसको मज़बूत करो।(४)

गर अज़मे तू दर रहे हक़, आहनीन हस्त

मी दान बे यक़ीन कि राहे आन यक़ीन हस्त

अगर सत्य के रास्ते में तुम्हारा इरादा पक्का हो तो, जान लो कि उसका रास्ता सिर्फ़ यक़ीन (विश्वास) है।
जब इंसान के दिल में यक़ीन (विश्वास) पैदा हो जाए तो दिल भी मज़बूत हो जाता है। और जब दिल में विश्वास होता है तो फिर शैतान उस पर हावी नहीं होता है।

इसी कारण उसमें परेशानी पैदा नहीं होगी और वह कठिनायों के सामने सीसा पिलाई हुई दीवार बना रहेगा।

हज़रत अली अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

من قوی یقینہ لم یرتب

जिसका यक़ीन (विश्वास) मज़बूत होता है उसमें शक पैदा नहीं होता है।(५)

गर बा सूरते मलकी या बा लताफ़ते हूरी

ता बे माना ना रसी, अज़ हमे दिलहा दूरी।

अगर तुम फ़रिशते या हूर की तरह हो तो भी कोई फ़यादा नहीं अगर अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचे। और जब तक अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचोगे तब तक किसी के दिल में भी जगह नहीं बना पाओगे।

दीन के सिलसिले में हमेशा शक ऐसे इंसान को होता है जिस के दिल में विश्वास और यक़ीन ना हो। जिनका यक़ीन कमाल की हद तक होता है उनमें शैतान कभी शक और वसवसा नहीं पैदा कर सकता है। और वह

शैतान के वसवसे और उसके धोके के सामने फ़ौलादी चट्टान बन कर खड़े रहते हैं।

इमाम-ए-बाक़िर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

فیمرّ الیقین بالقلب فیصیر کأنّہ زبر الحدید

जब दिल में यक़ीन पैदा हो जाता है तो वह उसे फौलाद की तरह मज़बूत बना देता है।(६)

दिल में यक़ीन पैदा होने की सूरत में इंसान ख़ुद तो शक से दूर होता ही है, दूसरों को भी शक से दूर करता है और उनमें यक़ीन पैदा करता है। अब हम यहाँ पर यक़ीन की एक मिसाल पेश करेंगेः

## मोबाहेले में हाज़री

(मोबाहेलाः उसको कहते हैं जिस में दो गिरोह होते हैं और एक दूसरे पर बददुआ करते हैं और जो सच्चा होता है ख़ुदा उसकी दुआ को क़बूल करता है।)

शीया धर्म गुरूओं ने बहुत ज़्यादा परीशानियाँ बर्दाशत करके ख़ुदा के दीन की हिफ़ाज़त की और उसको तहरीफ़ (तहरीफ़ः यनी दीन में कोई भी ऐसी चीज़ जो दीन में ना हो नहीं आने दिया और आज तक अस्ल दीन बाक़ी है। और उसमें दूसरे धर्म की तरह कोई भी बदलाव नहीं आया, जैसे यहूदी या ईसाई धर्म बदल गये।) होने से बचा लिया। हमारे बुज़ुर्गों (यानीः ओलमा ) ने वेलायत को बचाने और शीया मज़हब को साबित करने के लिए हर तरह की क़ुर्बानियाँ दी हैं। और अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की महानता को जानते और समझते हुए और उस पर यक़ीन रखते हुए अपने दुश्मनों से मोबाहेला भी किया है

और ख़ुदा ने उनको सफ़लता भी दी है और इस तरह उन्होंने अपने दीन के दुश्मनों का नाश किया है।

महान धर्म गुरू जनाब मोहम्मद इब्ने अहमद का मोबाहेला भी एक मिसाल है। उन्हों ने दुश्मनों के सामने शीया धर्म को सच और सही साबित भी किया। और शीयों के बुज़ुर्ग और महान धर्म गुरुओं में से हैं, और बहुत से बड़े-बड़े शीया धर्म गुरु जैसे शैख़ मुफ़ीद अलैहिर्रहमा ने उनसे रेवायत भी बयान की है। जनाब मोहम्मद इब्ने अहमद ने शीया अक़ाएद के बारे में बहुत सी किताबें भी लिखी हैं और आप जनाब क़ासिम इब्ने अला के शिष्यों में से हैं।

जनाब मोहम्मद इब्ने अहमद की आँखों की रौशनी चली गयी थी मगर उसके बावजूद उन्होंने लिखने वाला एक आदमी रखा हुआ था जिसकी सहायता से आप ने बहुत सी किताबें शीया अक़ाएद के बारे में लिखी हैं। उनके ज़माने का बादशा है, सैफ़ुद्दौला उनका बहुत मान-सम्मान करता था। उन्होंने सेफ़ुद्दौला के सामने मूसल के क़ाजी से मोबाहेला किया, जो कि बहुत ही मुतअस्सिब (भेद-भाव करने वाला) इंसान था, और मोबाहेले के बाद भी उसके दिल से तअस्सुब ख़त्म नहीं हुआ। लेकिन मोबाहेले का असर यह हुआ कि वह बीमार पड़ा, जो हाथ उसने मोबाहेले में उठाया था वह काला हो गया और इसी बीमारी में वह हलाक हो गया।(७)

इस तरह जनाब मोहम्मद इब्ने अहमद ने अपने यक़ीन और एतेक़ाद से उस मुतअस्सिब इंसान को मोबाहेले

में पराजित किया, शीया अक़ाएद को ज़िंदा किया, तारीख़ ऐसी मिसालों से भरी पड़ी है कि शिया धर्म गुरुओं नें अपने यक़ीन और एतेक़ाद की वजह से अपने दुश्मनों को पराजय दी है, और अपने यक़ीन के कारण ही वे लोग दूसरों में भी यक़ीन पैदा कर सके हैं।

मीर फ़न्दरसकी भी ऐसे ही लोगों में हैं जिन्होंने अपने यक़ीन और एतेक़ाद के कारण अपने दुश्मनों को शिकस्त दी। और दूसरों के दिलों में भी यक़ीन का बीज बोया।

इस वाक़ेए को स्वर्गीय नराक़ी अपनी किताब अलख़ज़ाएन में इस तरह लिखते हैं:

मीर फ़न्दरसकी, अपने एक सफ़र में, गैर मुस्लिम लोगों की बस्ती तक पहुँच गए और उनसे बात करने के लिए बैठ गए। उनमें से एक गिरोह ने कहा कि हमारा धर्म सच्चा है और आप का धर्म बातिल। और उसकी दलील यह है कि हमारी इबादत गाहें दो हज़ार साल पुरानी हैं मगर आप लोगों की मस्जिदें सौ साल से ज़्यादा पुरानी नहीं हैं। चूंकी हर धर्म की ऐसी ही चीज़ों का बाक़ी रहना उस धर्म के सच होने की दलील हैं और हमारे धर्म की यह सब चीज़ें बाक़ी हैं इस लिए हमार धर्म सच्चा है और आप का बातिल (झूटा)।

मीर फ़न्दरसकी ने अपने यक़ीन से इस बात का जवाब इस तरह दियाः

आप की इबादत गाहों का बाक़ी रहना और हमारी मस्जिदों के खराब होने का कारण यह है कि हमारी

मस्जिदों में ख़ुदा की इबादत होती है जिसको मस्जिद के दरो-दीवार बर्दाशत नहीं कर पाते हैं। और गिर जाते हैं क्योंकि ख़ुदा बहुत अज़ीम है, और उसकी इबादत भी।

और आप की इबादत गाहों में ख़ुदा की इबादत नहीं होती बल्कि ग़ैरे ख़ुदा की इबादत होती है इस लिए उसमें कोई भी ख़राबी पैदा नहीं होती है। अगर हमारे ख़ुदा कि इबादत तुम्हारी इबादत गाहों में होने लगे तो तुम भी देखो गे कि तुम्हारी इबादत गाहें भी बर्दाशत नहीं कर पाएँगी और गिर जाएँगी।

उन लोगों नें मीर फ़न्दरसकी से कहा कि यह बात भी साबित हो जाएगी आप जाकर हमारी इबादत गाह में इबादत करें, हम भी देखें कि वह बर्दाशत कर पाती हैं कि नहीं ?

जनाब मीर फ़न्दरसकी ने ऐसा ही किया, वज़ू किया, और वज़ू करने के बाद ख़ुदा पर तवक्कुल (भरोसा), और अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम से तवस्सुल करते हुए, इबादत गाह में प्रवेश किया जो कि बहुत ही मज़बूत बनी हुई थी, और दो हज़ार साल पुरानी थी।

लोगों की एक भीड़ जमा थी उस दृशय को देखने के लिए, जनाब मीर फ़न्दरसकी इबादत गाह में प्रवेश करने के बाद अज़ान और अक़ामत कही और नमाज़ की नीयत करते हुए बुलन्द आवाज़ में अल्लाहो अकबर कहा और इबादत गाह से भागते हुए बाहर निकले, लोगों ने देखा कि उस इबादत गाह की छत अचानक गिर गयी और

दीवारें भी ख़राब हो गयीं(८)। इस घटना को देख कर वहाँ के बहुत से काफ़िर मुसलमान हो गए।(९)

## २. विश्वास, आमाल में इज़ाफ़े का कारण

अगर कीमिया थोड़ा सस्ता भी हो तो वह जिस धातु पर डाला जाता है उसको बहुत क़ीमती बना देता है। यक़ीन और विश्वास भी ऐसे ही हैं, क्योंकि यक़ीन, आमाल को क़ीमती बनाता हैं अगर ख़दा और उसकी करामतों पर यक़ीन ना हों तो फिर आमाल की कोई अहमियत नहीं है। अगर थोड़े से भी आमाल को यक़ीन के साथ अंजाम दिया जाए तो ख़ुदा के प्रति, शक और शंका के साथ अंजाम दिए गए ज़्यादा आमाल से भी बेहतर है।

इमाम-ए-सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

ان العمل الدائم القليل على اليقين افضل عند الله من العمل الكثير على غير اليقين

यानीः ख़ुदा के नज़दीक, यक़ीन के साथ अंजाम दिया गया थोड़ा सा अमल, बिना यक़ीन के अंजाम दिए गए ज़्यादा अमल से बेहतर है।(१०)

यह हदीस साफ़-साफ़ इस बात को बयान करती है कि यक़ीन से आमाल की क़ीमत बढ़ जाती है। यानी, यक़ीन के साथ अंजाम दिया गया थोड़ा सा अमल, बिना यक़ीन के अंजाम दिए गए ज़्यादा अमल से बेहतर है। इस आधार पर यक़ीन कीमिया की तरह है जो धातु पर पड़ते ही उसको सोना बना देता है उसी तरह किसी भी अमल में जब यक़ीन पैदा हो जाता है तो उस अमल की क़ीमत ख़ुदा की निगाहों में और बढ़ जाती है।

और यह बात भी ध्यान में रहे कि थोड़ा अमल भी ख़ुदा के नज़दीक बहुत क़ीमती होता है, और जब कोई अमल ख़ुदा कि निगाहों में क़ीमती होगा तो उसका असर इंसान के जीवन पर अवश्य पड़ेगा। इस बारे में हम यहाँ एक वाक़ेआ बयान करेंगेः

मरजए आली क़द्र, आयतुल्लाहुल उज़मा, जनाबे ख़ूई रहमतुल्लाह अलैह, यक़ीन से कही जाने वली बिसमिल्लाह के बारे में जनाब शैख़ अहमद (यह व्यक्ति जनाब आयतुल्लाहु उज़मा जनाब मीरज़ा शीराज़ी के मुहाफ़िज़ों में से था) से यह वाक़ेआ बयान करते हैं।

उन्होंने फ़रमाया कि स्वर्गीय मीरज़ा का एक और भी मुहाफ़िज़ था। जिसका नाम शैख़ मोहम्मद था जिसने मीरज़ा शीराज़ी के देहान्त के बाद सबसे मिलना-जुल्ना छोड़कर गोशा नशीनी कर ली थी।

एक कोई व्यक्ति शैख़ मोहम्मद के पास आया और उसने देखा कि वह अपने दिये में पानी ड़ालकर जलाने का प्रयास कर रहे हैं और थोड़ी देर में चेराग़ भी जलने लगा। वह व्यक्ति बहुत हैरान हुआ और उसका कारण पूछा ?

शैख़ मोहम्मद ने उसको जवाब दिया मीरज़ा शीराज़ी के देहान्त से मुझे बहुत दुख पहुँचा, और उस ग़म की वजह से मैंने लोगों से मिलना जुलना छोड़ दिया और अपने घर में ही रहने लगा हूँ। मगर एक दिन एक अरब तालिबे इल्म मेरे पास आया और मेरे साथ बहुत प्यार से पेश आया, और मेरे पास सूरज के डूबने तक रहा, उसने मुझ से बहुत बातें की और उसकी बातें मुझे बहुत पसंद

आयी। और उसकी बातों से मेरे दिल का बोझ कुछ हल्का हो गया। उसके बाद वह कई दिन तक मेरे पास आता रहा और मैं भी उससे बहुत मानूस हो गया। एक दिन जब आया तो बातें करते-करते रात हो गयी और मुझे याद आया कि आज तो मेरे चेराग में तेल भी नहीं है और उस समय तक सारी दुकानें भी बंद हो चुकी थीं। और मैंने सोचा कि अगर इस समय तेल लाता हूँ तो इसकी बातें नहीं सुन पऊँगा और इतनी अच्छी-अच्छी बातों से वंचित रह जाऊँगा और अगर तेल नहीं जाता हूँ तो घर में रात भर अंधेरा रहेगा।

वह शायद मेरी हालत समझ गया था और कहा आज आप को क्या हो गया है कि मेरी बातों की तरफ़ आप का ध्यान नहीं है ?

मैंने कहा ऐसी बात नहीं है, मैं आप की बातें सुन रहा हूँ। उन्होंने कहा कि नहीं तुम्हारा ध्यान कहीं और है, क्या बात है मुझे बताओ ?

मैंने कहा कि बात यह है कि आज मेरे चेराग़ में तेल नहीं है।

उसने कहा कि यह बात तो बहुत ही आश्चर्यजनक है कि मैंने तुमसे इतनी बात की यहाँ तक कि बिस्मिल्लाह की फ़ज़ीलत बयान की और आपने इससे इतना भी नहीं सीखा कि बिस्मिल्लाह की इतनी फ़ज़ीलत है कि उससे चेराग़ में तेल की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

मैंने कहा कि मुझे याद नहीं कि आपने कोई ऐसी हदीस बयान की हो। उसने कहा कि आप भूल गये हैं।

बिस्मिल्लाह की एक बरकत यह है कि जो जिस काम को भी सोच कर कहे वह पूरा हो जाता है। तुम अपने चेराग़ में यह सोचकर पानी भर दो की वह तेल है मगर यह ध्यान रखना कि पानी भरते हुए बिस्मिल्लाह कहना।

मैंने उसकी बात मान ली और उठकर चेराग़ में पानी भरने लगा और बिस्मिल्लाह कहकर उसको जलाया तो वह जलने लगा। उस समय से लेकर आज तक जब भी इस चेराग़ का तेल ख़त्म होता है मैं बिस्मिल्लाह कहकर उसमें पानी भरता हूँ और यह जलने लगता है।

मरजए आली क़दर, आयतुल्लाहुल उज़मा, जनाबे ख़ूई रहमतुल्लाह अलैह इस वाक़ेए को बयान करने के बाद फ़रमाते हैं: आशचर्यजनक बात इस वाक़ेए में यह है कि यह वाक़ेआ सब लोगों के जानने के बाद भी उस चेराग़ में ज़र्रा बराबर कोई फ़रक़ नहीं पड़ा।(११)

जैसा की आप ने देखा कि बिस्मिल्लाह पर यह यक़ीन कितना असर अंदाज़ साबित हुआ।

## ३. यक़ीन (विश्वास) नफ़्स को पाक करता है

कभी-कभी इंसान अपने जिस्म (ज़ाहिर) को सजाता और सँवारता है लेकिन वह अपने अंदर (बातिन) से ग़ाफ़िल होता है जिसके कारण वह हमेशा बेचैनी महसूस करता है यह और बात है कि वह दुनिया की रंग-रलियों में पड़ के अपनी बेचैनियों को ना समझ सके या कुछ देर के लिए उससे ग़ाफिल हो जाए मगर हक़ीक़त वही है जो हमने कहा कि उसको रुहानी सकून नहीं मिल सकता है अगर नफ़्स और बातिन पाक ना हों। जब तक इंसान का

बातिन पाक ना हो उसको पता ही नहीं चलता कि जो अमल वह कर रहा है उसको ख़ुदा स्वीकार भी करेगा या नहीं ? वह हमेशा इसी उधेड़ बुन में लगा रहता है कि उसकी आख़ेरत कैसी होगी ? उसके आमाल ख़ुदा स्वीकार करेगा कि नहीं ? वह अपने बातिन को कैसे पाक करे ? क्या इस रूहानी ग़म से मुक्ति का कोई रास्ता है ?

इन प्रश्नो के उत्तर में हम यही कह सकते हैं कि अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के मआरिफ़ पर यक़ीन ही रूहानी ग़म से नेजात (मुक्ति) पाने का रास्ता हो सकता है, क्योंकि यक़ीन बातिन को पवित्र करता है। इसीलिए रविवार को पढ़ी जाने वाली दुआ में आया है किः

اللھم اصلح بالیقین سرائرنا

ख़ुदाया ! हमारे यक़ीन के माध्यम से हमारे बातिन की इस्लाह फ़रमा।(१२)

जिनके दिल में यक़ीन होता है वे लोग नेक और नेक सीरत होते हैं और बेकार कामों और बातों से दूर रहते हैं। और जिनके अंदर बुराई हो वे लोग भी अपने बातिन को यक़ीन की सहायता से पवित्र बना सकते हैं। यक़ीन ना केवल यह कि वह शैतान से, इंसान को सुरक्षित रखता है बल्कि अगर इंसान के बातिन में कोई बुराई होती है तो यह यक़ीन उसको भी पवित्र कर देता है और बातिन की बुराईयों को ख़त्म कर देता।

इसी वजह से रसूले ख़ुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम एक हदीस में फ़रमाते हैं:

خیر ما القی فی القلب الیقین

मोमिन के दिल में (ख़ुदा की तरफ़ से) डाली जाने वाली चीज़, ,यक़ीन है।(१३)

जैसा कि हमने बयान किया कि यक़ीन ना केवल यह कि वह शैतान से, इंसान को सुरक्षित रखता है बल्कि अगर इंसान के बातिन में कोई बुराई होती है तो यह यक़ीन उसको भी पवित्र कर देता है और बातिन की बुराईयों को ख़त्म कर देता।

## यक़ीन को शक में बदलने वाली निशानियाँ

### १.शकः

जो इंसान शक मे पड़ जाए वह आध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकता है। इसलिए यही कह सकते हैं कि जो इंसान आध्यात्मिक उन्नति (मानवी तरक़्की ) करना चाहता है उसको चाहिए की अपने दिल से शक व शंका को निकाल दे।

इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

انفوا عن نفوسکم الشکوک

अपने नफ़्सों से शक व शंका को निकाल दो।(१४)

मानवी और रूहानी शक्तियों को पाने के लिए अपने दिल से शक व शंका का निकालना बहुत ज़रूरी है, ताकि उसमें यक़ीन और ईमान भर जाए, इसलिए कि जब तक शक व शंका होंगी तब तक दिल में ईमान और यक़ीन जगह नहीं बना सकते हैं।

अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम ने हमेशा हम लोगों को अपने दिल से शक को दूर करने के बारे में ताकीद की है।इसीलिए हम मुनाजाते मुतीईन में पढ़ते हैं:

واثبت الحق فی سرائر نا فان الشکوک والظنون لوائح الفتن

ख़ुदा ! मेरे बातिन में हक़ को मुसतहकम कर दे, क्योंकि शक हमेशा फ़ितना पैदा करते हैं।(१५)

तारीख़ से यह बात पता चलती है कि सदरे इस्लाम से लेकर आज तक जिन फ़ितना व फ़साद ने मुसलमानों को गुमराह किया है, वह शक ही था जिस के कारण अक्सर मुसलमान गुमराह हो गये।

शक एक ऐसी बीमारी है जो इंसान के यक़ीन और ईमान को तबाह व बरबाद करदेती है और जब तक इंसान के अंदर शक रहता है उस समय तक इंसान कोई भी आध्यात्मिक तरक़्क़ी नहीं कर सकता है।

## २. गुनाह

अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम ने हमेशा इंसानो की रहनुमाई फ़रमाते हुए उनको गुनाहों से दूर रहने का हुक्म दिया है, क्योंकि गुनाह इंसान को शर्मिंदा भी करते हैं और ईमान की तबाही की वजह भी हैं। इस लिए गुनाह न केवल यह कि इंसान को आध्यात्मिक तरक़्क़ी से रोक देता है, बल्कि इंसान के अंदर पायी जाने वाली आध्यात्मिक शक्तियों को भी तहस-नहस कर देता है।

इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

قال سمعت ابا عبدالله : یقول اتقوا الله ، ولا یحسد بعضکم بعضاً، ان عیسیٰ بن مریم کان من شرایعه السیح فی البلاد ، فخرج فی بعض سیحه ومعه رجل من الصحابة قصیر ، وکان کثیر اللزوم لعیسیٰ بن مریم ، فلما

انتھیٰ عیسیٰ الیٰ البحر قال بسم اللہ، بصحۃ یقین منہ، فمشیٰ علی ظھر الماء فقال الرجل القصیر حین نظر الی عیسیٰ جازہ، بسم اللہ بصحۃ یقین منہ، فمشیٰ علی الماء و لحق بعیسیٰ، فدخلہ العجب بنفسہ۔
فقال ھذا عیسیٰ روح اللہ یمشی علی الماء وانا امشی علی الماء، فما فضلہ علیّ؟
قال: فرمس فی الماء فاستغاث بعیسیٰ فتناولہ من الماء فاخرجہ،
ثم قال لہ: ما قلّت یا قصیر؟
قال: قلّت: ھذا روح اللہ یمشی علی الماء وانا امشی، فدخلنی من ذلک عجب۔
فقال لہ عیسیٰ: لقد وضعت نفسک فی غیر الموضع الذی وضعک اللہ فیہ، فمقتک اللہ علیٰ ما قلّت، فتب الی اللہ عزّوجل مما قلّت۔
قال: فتاب الرجل وعاد الیٰ المرتبۃ التی وضعہ اللہ فیھا۔
فاتقوا اللہ ولا یحسدن بعضکم بعضاً

**दाऊद रक़्क़ी कहता है कि मैंने इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना कि आपने फ़रमाया कि ख़ुदा से डरो और एक दुसरे से ईषर्या ना करो।**

**जनाबे ईसा घूमने जाया करते थे। एक बार एक सफ़र में उनके साथ एक छोटे कद का व्यक्ति भी था। वह जनाबे ईसा के दोस्तों में से था।**

**वे लोग चलते चलते एक दरिया के पास पहुँचे, जनाबे ईसा ने पूरे यक़ीन के साथ बिस्मिल्लाह कहा पानी पर चलने लगे। जब उस व्यक्ति ने यह दृश्य देखा तो उसने भी पूर यक़ीन से बिस्मिल्लाह कहा और पानी पर चलता हुआ जनाबे ईसा तक पहुँच गया। लेकिन इसी समय उसके दिल में यह ख़याल आया कि यह जनाबे ईसा जो ख़ुदा के पैग़म्बर है, पानी पर चलते हैं और मैं भी चल सकता हूँ, तो वह किस बात में मुझ से बरतर हैं ? और उसने यह बात जनाबे ईसा से कहा और पानी में डूबने लगा।**

**जनाबे ईसा ने उससे फ़रमायाः**

ख़ुदा ने तुमको जो पद दिया किया था तुमने अपने आप को उससे बढ़ा दिया जिस के कारण ख़ुदा तुम से नाराज हो गया, इस लिए तुम ख़ुदा से तौबा करो। उस व्यक्ति ने ख़ुदा से तौबा की और ख़ुदा ने उसको, उसका मक़ाम व रुतबा वापस दे दिया।

पस ख़ुदा से डरो और एक दूसरे से हसद ना करो।(१६-१७)

यह रेवायत इस बात की दलील है कि गुनाह अगर ख़ुदा के ख़ास बन्दों और अवलियाए ख़ुदा से भी हो जाए तो ख़ुदा उनसे भी रुतबे और मक़ाम को छीन लेता है।

### ३. यक़ीन को खो देना

तारीख़ पर निगाह डालने से ऐसे लोग मिलेंगे कि जो अपनी ज़िन्दगी में यक़ीन और ऐतेक़ाद रखते थे, मगर साबित क़दम ना रह सके, अतः उन्होंने गुनाह के कारण, अपने यक़ीन और ईमान को खो दिया।

ऐसे ही लोगों में से एक ज़ोबैर भी थे कि जो रसूले ख़ुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम की वफ़ात के बाद, हज़रत अली अलैहिस्सलाम और अहलेबैते रसूल अलैहेमुस्सलाम की तरफ़दारी में सब से आगे आगे थे, वे हज़रत अली अलैहिस्सलाम के खास दोस्तों में से थे, लेकिन जब उनके बेटे बड़े हुए तो शैतान ने उनके दिल में शक का बीज बोया और फिर इस ने हज़रत अली अलैहिस्सलाम से बग़ावत, और उनसे जंग की।

हज़रत अली अलैहिस्सलाम उसके बारे फ़रमाते हैं:

مازال کان الزبیر منا اھل البیت حتی نشاء بنوہ فصر فوہ عنا

ज़ोबैर हमेशा हमारे अहलेबैत में से था, लकिन जब उसके बेटे बड़े हो गाए तो उन्होंने उसको हम से मुनहरिफ़ कर दिया।(१८)

इस लिए हम को ख़ुदा से अपने यक़ीन और ईमान के सही व सालिम रहने की दुआ करते रहना चाहिए कि जिसमें कभी कोई शक पैदा ना हो सके।

हम इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से बयान हुई जुमे की दुआ में पढ़ते हैं।

اللھم انی اسئلک ایماناً صادقاً ویقیناً لیس بعدہ کفر

ख़ुदा ! मैं तुझ से सच्चे ईमान और ऐसे यक़ीन की भीख मांगता हूँ कि जिसके बाद कुफ़्र और इनकार ना हो।(१९)

यह रेवायतें इस बात की दलील हैं कि गुनाह के कारण इंसान का यक़ीन और ईमान शक और कुफ़्र में बदल सकता है। लेहाज़ा तमाम इंसानो को अपने नफ़्से अम्मारा (वह नफ़्स जो इंसान को गुनाह की तरफ़ ले जाता है।) होशियार रहना चाहिए। अगर हम अपने नफ़्से अम्मारा से ग़ाफिल हो गए तो वह हमें गुनाहों की तरफ़ ले जाएगा, और गुनाह होने की सूरत में यक़ीन और ईमान हमारे हाथों से चला जाएगा। अतः हमें ख़ुदा वन्दे आलम से ऐसे ईमान की दुआ करना चाहिए जिसके बाद कुफ़्र, और ऐसे यक़ीन की दुआ करना चाहिए जिसके बाद शक ना हो।

इस आधार पर जिस दिल में नूरे ईमान और नूरे यक़ीन पाया जाता है, गुनाह होने की सूरत में उस नूर में

कमी हो जाती है। इस लिए हमारे लिए यह भी ज़रूरी है कि हमारे दिल में ग़ोरूर और घमंड भी ना आए क्योंकि इससे भी नूरे ईमान और नूरे यक़ीन में कमी हो जाती है। क्योंकि जिस ख़ुदा ने हमें नूरे ईमान और नूरे यक़ीन से संवारा है वह हम से उस नूर को गुनाह होने और दिल में घमंड आने के कारण छीन भी सकता है।

## यक़ीन हसिल होने के रास्ते

### १.मआरिफ़ का हासिल करना

(यानी ख़ुदा वन्दे आलम की हक़ीक़ी पहचान, और उसके एहकामात पर मोकम्मल यक़ीन।)

अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की हदीसों में यक़ीन की महानता और अज़मत को बयान किया गया है। अब सवाल यह पैदा होता है कि किस तरह हम यक़ीन की मंज़िल तक पहुँच सकते हैं ? इस सवाल का जवाब भी अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की हदीसों में पाया जाता है।

यक़ीन की मंज़िल तक पहुँचने के लिए सब से महत्वपूर्ण रास्ता, मआरिफ़ हैं।

जब इंसान मआरिफ़े इलाही से मोकम्मल तौर पर आगाह होता है तो पक्के इरादे के साथ यक़ीन की मंज़िल तक पहुँच जाता है।

रेवायात में इस बात को बयान किया गया है, मेराज की रात में ख़ुदा ने हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम से फ़रमायाः

والمعرفة تورث اليقين، فاذا استيقن العبد لا يبالى كيف اصبح، بعسر ام بيسر

मारेफ़त, यक़ीन का सबब है। और जब भी इंसान को यक़ीन हासिल हो जाएगा तो फ़िर उसको इस बात का डर और ख़ौफ़ नहीं होगा कि रात किस हाल में गुज़री है, सुबह कैसी हुई है ? चाहे यह सुखों में गुज़रें या दुखों में।(२०)

इस रेवायत से यह पता चलता है कि परेशानी और कशमकश की हालत उस वक़्त इंसान के अंदर पैदा होती है जब यक़ीन नहीं होता है। उस को दूर करने के लिए अपने अंदर यक़ीन पैदा करें और जब यक़ीन आ जाएगा तो मारेफ़त हासिल हो जाएगी, क्योंकि अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की मारेफ़त हासिल करने के लिए यक़ीन का होना बहुत ज़रूरी है।

## २. दुआ और ख़ुदा से राज़ व न्याज़

ख़ुदा से दुआ करने से हमारे अंदर यक़ीन पैदा होता है और उसमें इज़ाफा होता है।

हज़रत अली अलैहिस्सलाम अपने " मारूफा " नामी ख़ुत्बे में फ़रमाते हैं:

عباد اللہ سلوا اللہ الیقین

ऐ खुदा के बन्दो ! ख़ुदा से सवाल करो कि वह तुम्हें यक़ीन इनायत फ़रमाए।(२१)

इस आधार पर यक़ीन पैदा करने के लिए एक रास्ता ख़ुदा से दुआ करना भी है। और यह बात अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की हदीसों में भी सराहत के साथ बयान हुई है जैसे की ऊपर हम ने हज़रत अली अलैहिस्सलाम के ख़ुत्बे के एक हिस्से को बयान किया।

जब इंसान हलाकत की कगार पर हो तो यह बात संभव है कि वह अपने यक़ीन और विश्वास को खो दे। और उसका ईमान और यक़ीन कमज़ोर हो जाता है। इसी लिए अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम ने हमें इस बात का हुक्म दिया है कि हम ख़ुदा से यक़ीन को हासिल करने के लिए दुआ करें।

जो इंसान शक के बाद यक़ीन पैदा कर लेता है वह ऐसा ही है जैसे कि कोई कुफ़्र के बाद दोबारा ईमान ले आए और उसे नया जीवन मिल जाए।

ख़ुदा वन्दे आलम कुर्आन मजीद में फ़रमाता हैः

اومن کان میتاً فاحییناہ وجعلنا لہ نوراً یمشی بہ فی الناس کمن مثلہ فی الظلمات لیس بخارج منھا

क्या वह शख़्स जो मुर्दा (काफ़िर) था, पस हमने उसको ज़िन्दगी (हेदायत) दी। और उसके लिए एक नूर क़रार दिया जिस के सहारे वह लोगों के बीच में चलता है, तो क्या उसकी मिसाल उस इंसान की तरह है जो अंधेरों में हो और उससे मुक्ति भी ना पा सकता ?(22)

यह आयत उन लोगों के लिए है जो शक के अंधेरे से निकल कर यक़ीन के नूर में प्रवेश होते हैं। जिस तरह शक दिलों को सयाह बनाती हैं उसी तरह यक़ीन दिल को नूरानी करता है।

हज़रत इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

لانور کنور الیقین

यक़ीन के नूर जैसा कोई भी नूर नहीं है।(२३)

जो लोग शक में पड़े हुए हों क्या वे लोग उन लोगो की तरह है जिनके दिलो में यक़ीन ने घर बनाया हुआ है ?

दिल में यक़ीन पैदा करने के लिए ख़ुदा से दुआ करें कि ख़ुदा हमारे दिल को यक़ीन के नूर से मुनव्वर करें क्योंकि अगर यक़ीन पक्का होगा तो इंसान ज़िन्दगी की सख़्त से सख़्त परीक्षा में भी पास हो जाएगा। और उसके यक़ीन में भी इज़ाफ़ा होगा।

पक्का यक़ीन उस सूरत में प्राप्त हो सकता है कि जब ख़ुद इंसान का इरादा मज़बूत हो और उसके ईरादे में किसी भी तरह की कम्ज़ोरी ना पायी जाती हो।

नमाज़-ए-ज़ोहर की ताक़ीब में इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हैः

اسألک حقایق الایمان وصدق الیقین فی المواطن کلها

ख़ुदाया ! मैं हर हाल में तुझ से सच्चे ईमान और यक़ीन की भीख माँगता हूँ।(२४)

इस रेवायत में इस बात को बयान किया गया है कि इंसान को हर हाल में ख़ुदा से सच्चे ईमान और यक़ीन के बारे में दुआ करते रहना चाहिए ताकि ज़िन्दगी के सख़्त से सख़्त इम्तेहान में भी इंसान के क़दम ना लड़खड़ाएँ और ख़ुदा पर उसके यक़ीन में कोई कमी ना आए। ऐसे यक़ीन को पाना आसान नहीं है बल्कि ऐसे यक़ीन को पाने के लिए ख़ुदा से दुआ करना चाहिए और उससे ईमान और यक़ीन की भीख माँगना चाहिए क्योंकि

मोकम्मल यक़ीन ख़ुदा के अवलिया की सिफ़त है जो हर किसी को नसीब नहीं होती है।

### ३. नफ़्स की इस्लाह

नफ़्स की इस्लाह, यक़ीन तक पहुँचने का तीसरा रास्ता है। नफ़्स की इस्लाह की सहायता से इंसान यक़ीन तक पहुँच सकता है। क्योंकि यक़ीन इंसान को असली मंज़िल तक पहुँचाता है और नफ़्स की इस्लाह से उस यक़ीन में इज़ाफ़ा होता है।

इसी बात को बयान करने के लिए इमाम-ए-मुसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने एक रेवायत में इसको बयान किया हैः

باصلاحکم انفسکم تتزداد وایقیناً وتربحوا نفیساً ثمیناً، رحم اللہ امرءً ھم بخیر فعملہ او ھم بشر فارتدع عنہ، ثم قال: نحن نؤید الروح بالطاعۃ للہ والعمل لہ

अपने नफ़्स की इस्लाह के माध्यस से अपने यक़ीन में इज़ाफ़ा करें। ख़ुदा उस इंसान पर रहमत करे कि जो अच्छे काम की हिम्मत करे, और उसको अंजाम दे, या बुरे काम का इरादा करे लकिन अपने नफ़्स पर क़ाबू करते हुए उसको अंजाम ना दे। फिर इमाम ने फ़रमायाः

हम अहलेबैत ख़ुदा की इताअत के ज़रिए, और अपने अमल के ज़रिए रूह की ताईद करते हैं।(२५)

पस नफ़्स की इस्लाह से इंसान के यक़ीन में इज़ाफ़ा होता है क्योंकि शक शैतान के बहकाने के कारण ही पैदा होता है, और इस्लाहे नफ़्स के माध्यम से इंसान शैतान और ख़ुद नफ़्स दोनो पर हावी (ग़ालिब) रहता है।

अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की हदीसों से यह पता चलता है कि यक़ीन और इस्लाहे नफ़्स के बीच एक गहरा सम्बंध है। यानी इसका मतलब यह है कि नफ़्स की इस्लाह के माध्यम से यक़ीन में भी इज़ाफ़ा होता है। पस नफ़्स की इस्लाह करके आप अपने यक़ीन में इज़ाफ़ा कर सकते हैं। इसी तरह यक़ीन के माध्यम से आप अपने बातिन (नफ़्स) को पवित्र बना सकते है।

तारीख़ में जो लोग चमत्कारी थे उन लोगों ने अपने यक़ीन की शक्तियों से लाभ उठाया है। इस बात को साबित करने के लिए हम एक वाक़ेआ बयान करते हैं।

स्वर्गीय शैख़ हसन अली इस्फ़हानी ने बयान किया है कि आपने फ़रमायाः

जब मैं हज के लिए हेजाज़ पहुँचा तो मेरे पास पैसे नहीं थे। मक्के में टैक्स के नाम पर हर यात्री से कुछ पैसे लेते हैं। तो कुछ लोग वह टैक्स नहीं देना चाहते थे इस लिए हम लोग जद्दा के रास्ते मक्का जाने लगे। रास्ते में पुलिस वालों से ने मुलाक़ात हुई तो उन लोगों ने कहा कि जब तक टैक्स लेने वाली पुलिस यहाँ ना पहुँच जाए तुम लोग यहीं खड़े रहो, और टैक्स देने के बाद ही मक्का जा सकते हो।

हम लोग एक खजूर के पेड़ के नीचे बैठ कर पुलिस वालों का इंतेज़ार करने लगे। और वहीं पर सब लोगों ने टैक्स देने के लिए पैसे जमा करना शुरू किये और मुझ से भी टैक्स के पैसे माँगे।

मैंने कहा कि मेरे पास तो टैक्स देने के लिए पैसे नहीं हैं। तो उन लोगों ने कहा कि अगर तुम हम से यह उम्मीद करते हो कि हम तुम को पैसे देगें तो ग़लत सोचते हो, हम तुम को पैसे नहीं देंगे, और अगर तुम पैसा नहीं दोगे तो फिर मक्का नहीं जा सकते हो।

मैंने उन लोगों से कहा कि मुझे तुम से कोई उम्मीद नहीं है, बल्कि मै तो ख़ुदा से उम्मीद करता हूँ कि जो मेरी मदद ज़रूर करेगा।

उन लोगों ने मेरा मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा की इस बियाबन और सहरा में ख़ुदा किस तरह तुम्हारी मदद करेगा ?!

मैंने कहा की रसूले ख़ुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम ने एक हदीस में फ़रमाया कि जो लोगों कि ख़िदमत करे और उसके बदले में कोई मज़दूरी ना ले तो ख़ुदा वन्दे आलम बियाबान में भी उसकी, उसी तरह मदद करेगा। और रूकावटों को ख़त्म करेगा।

एक घेंटे के बाद उन लोगों ने फिर मुझ से वही पैसों का सवाल किया और मैंने उनको वही जवाब दिया, तो उन लोगों ने फिर मेरा मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा कि ऐसा लगता है कि इस आदमी ने अफ़ीम पी ली हो कि जिसके कारण ऐसी बातें कर रहा है। वरना इस बियाबान में हम लोगों के अलावा कौन है कि जो इसकी मदद करे, लेकिन हम भी इसकी मदद नहीं करेंगे।

कुछ देर गुज़रने के बाद दूर से मट्टी उड़ते हुए देखाई दी, मैंने उन लोगों से कहा कि यह मेरी तरफ़ आने वाली नेकी है, उन लोगों ने फिर मेरा मज़ाक उड़ाया, जब मट्टी छटी तो उसमें से दो सवार दिखाई दिए जो अपने घोड़े की लगाम पकड़ कर खींचते हुए हमारे पास आए और उनमें से एक ने कहा कि तुम लोगों में से शैख़ अली इस्फ़हानी कौन है?

मेरे साथियों ने मेरी तरफ़ इशारा करते हुए कि शैख़ अली इस्फ़हानी यह हैं।

उन लोगों ने कहा कि शरीफ़ की दावत को स्वीकार करें। और मैं घोड़े पर सवार हो गया और शरीफ़ मक्का की तरफ़ चल पड़ा। जब शरीफ़ ने मक्के में प्रवेश किया तो मैंने देखा कि वहाँ स्वर्गीय शैख़ फ़ज़लुलल्लाह नूरी और स्वर्गीय शैख़ मोहम्मद जवाद बैदाबादी भी उपस्थित हैं। शरीफ़ की कोई मनोकामना थी जो मेरे दुआ करने के कारण पूरी हुई थी यह बात मुझे बाद में पता चली।

शरीफ़ ने पहले वह मनोकामना स्वर्गीय शैख़ फ़ज़लुलल्लाह नूरी से कहा था तो उन्होंने कहा कि तुम्हारी यह मनोकामना फ़लाँ व्यक्ति ही पूरी कर सकता है तुम अपने नौकरों को हुक्म दो कि उस व्यक्ति को जहाँ भी हो खोज कर लाएँ, इसीलिए शरीफ़ ने हुक्म दिया कि मक्का के सारे रास्तों को छान मारो और उस व्यक्ति (यानीः स्वर्गीय शैख़ हसन अली इस्फ़हानी) को खोज कर लाओ।

तो यह थी अवलियाए ख़ुदा में से एक वली की मिसाल जो ख़ुदा पर इतना यक़ीन रखते थे कि जिसके

बारे में हम सोच भी नहीं सकते हैं और उनके यक़ीन का नतीजा था कि ख़ुदा ने क़दम क़दम पर उनकी सहायता की और कभी भी उनको निराश नहीं किया।

इस पूरे निबंध का निष्कर्ष यह कि हमारी फ़िक्र और सोच-विचार उस सूरत में लाभदायक हैं जब उसमें यक़ीन पाया जाता हो। जो भी ख़ुदा तक पहुँचना चाहता है वह अपने अंदर यक़ीन पैदा करे।

जिनका संपर्क ग़ैब से होता है उनके अंदर यक़ीन ज़्यादा पाया जाता हैं, और वह अपने यक़ीन को और बढ़ाने की फ़िक्र में होते है। क्योंकि यक़ीन मानवी (आध्यात्मिक) शक्तियों को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण रोल निभाती है। जिस दिल में यक़ीन पाया जाता है उसमें शैतान कभी जगह नहीं बना सकता है। और जब शैतान दिल में घर नहीं बना नहीं सकेगा तो ऐसी सूरत में बातिन (नफ़्स) भी पवित्र हो जाएगा, और ख़ुदा की नज़रों में आमाल की भी अहमियत बढ़ जाएगी।

ख़ुदा की मारेफ़त, नफ़्स की इस्लाह ख़ुदा के विशेष बंदों की सिफ़त है।

यक़ीन उसी सूरत में प्राप्त हो सकता है कि जब गुनाहों को छोड़ दिया जाए क्योंकि गुनाह बरसों की नेकियों और यक़ीन को नीस्त-नाबूद कर देते हैं।

गर अज़मे तू मोहकम व मतीन आमदे अस्त
दर परतवे अनवार यक़ीन आमदे अस्त
ता नूर यक़ीन बे दिल नताबीद, कुजा ?
सर पंजए अज़म, अज़ आसतीन आमदे अस्त

तुम्हारा इरादा मज़बूत हो मगर मज़बूत इरादे के साथ-साथ पक्का यक़ीन भी हो। जब तक दिल यक़ीन (विश्वास) के प्रकाश से प्रकाशमयी ना हो तब तक पक्का इरादा प्राप्त नहीं हो सकता है।

## यह किताबें देखें।

१. सूर-ए-अनामः ७५
२. सुर-ए-बक़राः २६०
३. बेहारुल अनवारः ७०/१७६
४. बेहारुल अनवारः ७७/२१९
५. शरहे गुररुल हेकम ५/२३०
६. बेहारुल अनवारः ७८/१८५
७. फ़वाएदुर्रज़वीया, मोहद्दिसे क़ुम्मीः ३८८
८. जामेए दुररः २/३७०
९. तज़केरतुल क़ुबूरः ६०
१०. उसूले काफ़ीः २/५७
११. बा महरमाने राज़ः ५४
१२. बेहारुल अनवारः ९०/२८६
१३. बेहारुल अनवारः २१/२११

१४. बेहारुल अनवारः ५१/१४७
१५. बेहारुल अनवारः ९४/१४७
१६. बेहारुल अनवारः ७३/२४४
१७. उसूले काफ़ीः २/306
18. बेहारुल अनवारः २८/३४७
१९. बेहारुल अनवारः ९०/४२
२०. बेहारुल अनवारः ७७/२७
२१. बेहरुल अनवारः ७७/२९३
२२. सूरए अनआम, आयत न०. १२२
२३. बेहारुल अनवारः ७८/१६५
२४. बेहारुल अनवारः ८६/७१
२५. बेहारुल अनवारः ६९/१९४. उसूले काफ़ीः २/२६८

This document was created with Win2PDF available at http://www.daneprairie.com.
The unregistered version of Win2PDF is for evaluation or non-commercial use only.